हज़रत इमाम हुसैन(अ०) का अमर बलिदान

जनाब मुहम्मद हसन "शाहिद नक़वी", एम०ए० हिन्दी-रत्न (ग्वालियर)

परम शक्तिशाली ईश्वर ने मनुष्य को संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी बना कर भेजा, परन्तु जब इन्सान ने दुनिया में क़दम रखा और दुनिया का जायज़ा लिया... तो वह हैरान रह गया... पहाड़ों की ऊँची-ऊँची चोटियों, आकाश के असीम विस्तार और समुद्र की गहराइयों के बीच मनुष्य को अपना अस्तित्व बड़ा हीन सा लगा। हैरान व परेशान था कि वह किस प्रकार अपने आपको दुनिया में सर्वश्रेष्ट सिद्ध करे? तब ईश्वर ने मानो उससे कहा... "मैंने तुझे अक़्ल दी है... यदि तू अपनी बुद्धि का सही प्रयोग करता है... तो निश्चय ही तू अपने आपको दुनिया का सर्वश्रेष्ठ प्राणी सिद्ध कर सकेगा और तू सम्पूर्ण प्रकृति का स्वाही हो जायेगा।" और मनुष्य ने ऐसा ही किया। अपनी बुद्धि से नाना प्रकार के अविष्कार करके वह सारी प्रकृति को अपने अधिकार में कर बैठा। पहाड़ों को सूरमा बनाया, समुद्रों में तैरा और हवाओं में उड़कर आसमानी वस्तुओं को चुनौती देने लगा।

मनुष्य सारे संसार को अपने वश में कर सकता है, परन्तु अपने आप पर अधिकार करना उसके लिए बड़ा कठिन होता है। सारे संसार को अपने वश में कर लेने वाला मनुष्य भी -अपनी इन्द्रियों को- अपने नफ़्स को अपने अधिकार में कर सकने में अपने आपको विवश पाता है। इसलिए ईश्वर ने समय-समय पर अपने पैग़म्बरों को भेजा; ताकि वे सारी प्रकृति पर अधिकार करने वाले मनुष्य को अपने आप पर अधिकार करना सिखलाएं।

मनुष्य के अन्दर दो प्रकार की भावनाएं होती हैं। पहली स्वार्थ की भावना और दूसरी परहित की। इन्हीं दोनों भावनाओं की कशमकश में इंसान की ज़िन्दगी बीतती है। पैग़म्बर दुनिया में इसलिए आए कि वे मनुष्य को बताएं कि अपनी स्वार्थ भावना को दबाकर परहित की भावना को किस प्रकार वरीयता दी जाए। स्वयं कष्ट झेलकर दूसरों के कष्ट किस प्रकार हरे जाएं।

परन्तु आदम के साथ ही साथ शैतान भी दुनिया में आया। और शैतान यह सोचकर आया था कि वह इंसान के हर श्रेष्ठ कार्य में विध्न-बाधा उपस्थित करेगा। ऐसा नहीं हुआ कि शैतान दुनिया में अकेला रहा है। अगर आदम की औलादें हुईं और शैतान लावलद रहा तो शैतान ने आदम की औलाद में से कुछ को गुमराह करके अपना साथी बना लिया। आदम की वंश-वृद्धि के साथ-साथ शैतान के अनुयायियों की संख्या बढ़ती गई और हर दौर में शैतान अपना एक शक्तिशाली संगठन बनाए रहा।

दुनिया में सुख और शांति स्थापित करने के लिए ईश्वर समय-समय पर पैग़म्बरों को भेजता रहा। और शैतान हर पैग़म्बर के सामने एक नये रूप में आता रहा। जो शैतान आदम को चुनौती देने के लिए शैतान के रूप में प्रकट हुआ था, वही शैतान 'हज़रत नूह' को परेशान करने के लिए उनकी उम्मत बनकर आ गया। वही शैतान "हज़रत इब्राहीम" के ज़माने में नमरूद बन कर आया, इसी शैतान ने "हज़रत मूसा" के ज़माने में "फ़िरऔन" की शक्ल इख़्तियार की। इसी शैतान ने "हज़रत यूसुफ़" के भाईयों के भेष में आकर उन्हें सरे बाज़ार नीलाम कर दिया। आख़िरी पैग़म्बर "हज़रत मुहम्मद" सहब के सामने यही शैतान "अबूजहल" के रूप में आया।

इस्लाम धर्म के प्रवर्तक पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद साहब की मृत्यु के पश्चात् अरब में वे तमाम बुराइयाँ

पुनः स्थापित होने लगीं जिनका अन्त करने के लिए इस्लाम का उदय हुआ था। उस समय तक शैतान अपना एक शक्तिशाली साम्राज्य स्थापित कर चुका था और यज़ीद का रूप धारण करके अपने आपको मुसलमानों का ख़लीफ़ा कहने लगा था। यज़ीद ने तख़्त-ए-ख़िलाफ़त पर बैठकर अब तक आए हुए तमाम पैग़म्बरों का मिशन बेकार करने की योजना बना डाली। इसी योजना के अन्तर्गत हज़रत मुहम्मद साहब के तत्कालीन उत्तराधिकारी हज़रत इमाम हुसैन से अपनी अधीनता स्वीकार करने की बात कही। अधीनता न स्वीकार करने पर क़त्ल की धमकी देने लगा।

ठीक इसी तरह की धमकी मानव-इतिहास के प्रारम्भ में हज़रत आदम के अयोग्य और घमण्डी पुत्र क़ाबील ने अपने योग्य और विनम्र भाई हज़रत हाबील को देते हुए कहा था- "तुम हमारे रास्ते से हट जाओ, यदि तुमने ईश्वर की अराधना की और तुम्हारी आराधना स्वीकार हो गई तो मैं तुम्हें क़त्ल कर दूँगा।" हज़रत हाबील क़त्ल कर दिये गए परन्तु अपने सत्य के रास्ते से विचलित नहीं हुए। अब यही धमकी यज़ीद हज़रत इमाम हुसैन को दे रहा था। मानो शैतान आदम से कह रहा था- 'तुम मेरी अधीनता स्वीकार करो"।

यज़ीद कौन था? अत्याचार, अन्याय, असमानता और उत्पीड़न का प्रतीक और हज़रत इमाम हुसैन उन तमाम पैग़म्बरों के उत्तराधिकारी थे जो हज़रत आदम से लेकर अब तक दुनिया से अत्याचार, अन्याय, असमानता, और उत्पीड़न को समाप्त करने के लिए आए थे।

हज़रत इमाम हुसैन का यज़ीद की अधीनता स्वीकार कर लेने का अभिप्राय होता उन तमाम मानव-विरोधी शक्तियों को मान्यता प्रदान कर देना जो दुनिया में अत्याचार, अन्याय, असमानता एवं उत्पीड़न फैलाती हैं। अतः मानवता के महान् रक्षक तथा सत्य और अहिंसा के पुजारी हज़रत इमाम हुसैन ने यज़ीद की अधीनता स्वीकार करने से स्पष्ट इनकार करते हुए कहा- "चाहे हमें कितना ही बड़ा बलिदान क्यों न देना पड़े, हम मानव-विरोधी शक्तियों के आगे सर नहीं झुकायेंगे।" यह वही उत्तर था जो मानव इतिहास के प्रारम्भ में हज़रत हाबील ने अपने अत्याचारी भाई क़ाबील को दिया था।

मानवता के गौरव हज़रत इमाम हुसैन के इस एतिहासिक उत्तर ने मानवता का सर हमेशा-हमेशा के लिए बलन्द कर दिया और ज़ुल्म व जोर को झुका दिया। परन्तु हज़रत इमाम हुसैन के इस एतिहासिक उत्तर ने वक़्त के तेवर बदल दिये और हक़ की इस आवाज़ को दबाने के लिए कर्बला के एतिहासिक मैदान में सारी मानव विरोधी शक्तियाँ सिमट कर आ गईं। कश्मीरी शायर हज़रत ख़िज़्र बर्नी ने ठीक ही कहा हैः-

"जब भी किसी ने हक़ की सदाएं बुलन्द कीं।
देखा गया है वक़्त के तेवर बदल गऐ।"

हज़रत इमाम हुसैन भी इन मानव-विरोधी शक्तियों का मुक़ाबला करने के लिए कर्बला के मैदान में आए लेकिन फ़ौज लेकर नहीं। मानवता ने फ़ौज का सहारा कभी नहीं लिया। हज़रत इमाम हुसैन ने हथियार नहीं जमा किये, जो अहिंसा और आत्म शक्ति पर विश्वास रखते हैं वे हथियारों का सहारा नहीं लिया करते। हज़रत इमाम हुसैन अपने अज़ीज़ों और दोस्तों में केवल बहत्तर लोगों को लेकर आये, जिनमें बूढ़े भी थे जवान भी थे, औरतें भी थीं और बच्चे भी थे। हर उम्र और हर आयु का एक-एक नुमाइन्दा था- हज़रत इमाम हुसैन के साथ। अगर बूढ़े हज़रत "हबीब इब्ने मज़ाहिर" थे, तो छः माह का दूध पीता "अली असग़र" भी था। लेकिन हर एक का अज़्म वही था जो इमाम हुसैन का। इसलिए कहना चाहूँगा कि कर्बला में एक नहीं बहत्तर हुसैन थे। हुसैन के गिरोह का हर फ़र्द हुसैन था और हर एक सत्य और अहिंसा का पुजारी मानवता की रक्षा के लिए बड़ा से बड़ा बलिदान देने को तैयार था।

यज़ीदी फ़ौज ने इमाम हुसैन के इस छोटे से परिवार को कर्बला के रेगिस्तान में चारो ओर से घेर लिया। उन पर तरह-तरह के अत्याचार ढाये जाने लगे। जिन पर पानी तक बन्द कर दिया गया। छोटे-छोटे बच्चे प्यास से बिलकने लगे। कर्बला के रेगिस्तान में हज़रत हुसैन के छोटे से परिवार पर मुसीबतों के पहाड़ टूटने लगे। लेकिन जहाँ अज़्म की पुख़्तगी हो, हौसले बलन्द हों,

रूहें पाक हों, इरादे नेक हों, वहाँ मुसीबतों के पहाड़ भी नहीं टिक सकते। यह इरादे की पवित्रता ही थी हज़रत इमाम हुसैन के एक बच्चे तक ने भी यज़ीदी लश्कर की शान व शौकत की तरफ़ देखा नहीं। और यह यज़ीदी मिशन में रूहानियत की कमी ही थी कि "हुर" जैसा बहादुर सिपहसालार यज़ीदी लश्कर से निकल कर हज़रत इमाम हुसैन के गिरोह में शामिल हो गया। वास्तव में यहीं पर हज़रत इमाम हुसैन को तारीख़ी फतेह मिल गई थी। इसके बाद जो कुछ हुआ वह यज़ीदी फ़ौज की बौखलाहट और दरिंदगी ही थी।

हज़रत इमाम हुसैन के सारे साथी भूखे-प्यासे शहीद कर दिये गये उनके खेमों में आग लगा दी गई। औरतों को क़ैद करके कूफ़े और शाम के बाज़ारों में नंगे सर घुमाया गया और उन पर मुसीबतों के वह पहाड़ तोड़े गए जिनकी कल्पना मात्र से ही मानवता का सर झुक जाता है, इन्सानियत कांप उठती है, दिल दहलने लगता है और बेसाख़्ता आंखें बन्द कर लेने को जी चाहता है।

यह सब कुछ हुआ, परन्तु मानवता के रक्षक हज़रत इमाम हुसैन ने यज़ीद की अधीनता न स्वीकार की और न अत्याचार के आगे सर झुकाया।

कर्बला में हज़रत इमाम हुसैन मानव अधिकारों के लिए लड़े थे। उन्होंने अपनी तथा अपने परिवार की कुर्बानी सम्पूर्ण मानवता के रक्षार्थ दी थी।

कर्बला की यह घटना सन् 61 हिजरी के मोहर्रम नामक महीने में घटी थी। अतः प्रत्येक वर्ष मोहर्रम के महीने में इस कुबानी की याद मनाई जाती है और इस पर्व को मोहर्रम के नाम से पुकारते हैं। मोहर्रम का पर्व निरन्तर दस दिन तक मनाया जाता है। यह एक ग़म का त्योहार है, जिसमें हज़रत इमाम हुसैन की कुर्बानी की याद ताज़ा हो जाती है। शिया सम्प्रदाय के लोग तथा इमाम हुसैन के मानने वाले अन्य लोग दस दिन तक शोक मनाते हैं। काले कपड़े पहनते हैं और खुशी का कोई काम नहीं किया जाता। दस दिन तक स्थान-स्थान पर इमामबाड़ों में मजलिसें होती हैं, जिसमें इमाम हुसैन की कुर्बानी से सम्बन्धित भाषण होते हैं। नौहे और मर्सिये पढ़े जाते हैं। जगह-जगह पर हज़रत इमाम हुसैन की समाधि के प्रतीक "ताज़िये" रखे जाते हैं। जिन पर हर जाति के लोग प्रसाद और फूल मालाएं चढ़ाकर हज़रत इमाम हुसैन को श्रृदांजलि आर्पित करते हैं। इन ताज़ियों के जुलूस भी निकाले जाते हैं, जिनको "गश्त" कहते हैं। हज़रत इमाम हुसैन की स्मृति में लंगर लुटाकर एवं नज़रें दिलाकर भूखों को खाना खिलाया जाता है और सबील रखकर प्यासों को शर्बत और पानी पिलाया जाता है।

मोहर्रम के दसवें दिन को "यौमे आशूर" कहते हैं। जिस दिन मजलिसों एवं जुलूस के विशेष कार्यक्रमों से मोहर्रम पर्व का समापन होता है।

केवल शिया या इस्लाम धर्म के अनुयायी ही नहीं- मोहर्रम एक महान् राष्ट्रीय पर्व है, जिसे दुनिया की हर जाति हर क़ौम के लोग मनाते हैं। दुनिया का ऐसा कोई कोना नहीं, जहाँ मोहर्रम के दिनों में मानवता के अमर बलिदानी हज़रत इमाम हुसैन की याद न मनाई जाती हो। संसार के हर गोशे में हज़रत इमाम हुसैन का मातम होता है।

और क्यों न हो? मानवता के गौरव सत्य अहिंसा और शांति के अमरदूत हज़रत इमाम हुसैन ने कर्बला के मैदान में अपनी तथा अपने अज़ीज़ों की महान और लासानी कुर्बानी देकर सिर्फ़ इस्लाम की ही नहीं, सम्पूर्ण मानवता की रक्षा की थी। पूरी दुनिया-ए-इंसानियत पर एहसान किया था।

हज़रत इमाम हुसैन मज़हब या सल्तनत के लिए नहीं, मानव अधिकारों के लिए लड़े थे। हज़रत इमाम हुसैन दुनिया के हर कोने के, हर समय के उन तमाम लोगों की तरफ़ से लड़े थे, जिन्हें मानव अधिकारों से वंचित किया जाता है जो कुचले जाते हैं, जो दबाये जाते हैं और जिन पर बेगुनाह ज़ुल्म व सितम के पहाड़ तोड़े जाते हैं।

हज़रत इमाम हुसैन की आवाज़ साम्राज्यवादी शक्तियों और हर दौर की तानाशाही हुकूमतों के ख़िलाफ़ एक ताक़तवर आवाज़ थी। हज़रत इमाम हुसैन की कुर्बानी दुनिया के फ़ासिज़्म के ख़िलाफ़ एक अजीब व ग़रीब आवाज़ थी।

(मु० 1395^हि०^/जनवरी 1975^ई०^ इमामिया मिशन, लखनऊ)